culture. I think, decolonization of our imagination, of our culture, should be all inclusive, should not be a political project. It should rather be a socio-cultural undertaking involving people from all religions and all walks of life.

RECOMMENDATIONS OF THE BUSINESS ADVISORY COMMITTEE

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Members, I have to inform the House that the Business Advisory Committee at its meeting held today, 25th of March, 2022, has allotted time for Government Legislative Business as follows:

Consideration and passing of the following Bills, after they are passed by Lok Sabha:-

(i)	The Constitution (Scheduled Castes and Scheduled Tribes) Orders (Amendment) Bill, 2022	Two hours
(ii)	The Criminal Procedure (Identification) Bill, 2022	Three hours
(iii)	The Indian Antarctica Bill, 2022	Three hours
(iv)	The Delhi Municipal Corporation (Amendment)Bill, 2022	Three hours

---

PRIVATE MEMBERS' RESOLUTION - *Contd.*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Shri Binoy Viswam; not present. Shri Mahesh Poddar.

श्री महेश पोद्दार (झारखंड) : उपसभाध्यक्ष महोदय, विभिन्न विद्वानों के शास्त्रार्थ के बीच मैं भी अपनी बात इस सदन में जो सदस्य बोलने के लिए बचे हुए हैं, उनके सामने आपके माध्यम से रखने की कोशिश करूँगा।

महोदय, मैं इस प्रस्तावित प्रस्ताव को पढ़कर रोमांचित हूँ। भारतीय मूल के मसौदे में ज्ञान और उत्कृष्टता की विभिन्न धाराओं का उल्लेख है और इस प्रस्ताव का समर्थन करना केवल देशभक्ति प्रतीत होती है और ऐसा होना भी चाहिए। इस संकल्प को आगे बढ़ाने के लिए व्यक्ति भावनात्मक रूप

से प्रवृत्त होगा, लेकिन ऐसी भावनात्मक शक्ति का नकारात्मक पहलू भी है, यानी कोई भी तर्कसंगत चर्चा, यहाँ तक कि रचनात्मक आलोचना को भी देशद्रोही या गैर-भारतीय कहा जा सकता है। इसके भी कुछ उदाहरण हम लोगों ने आज देखे। मेरा एक ही विचार है कि जब यह सम्मानित सदन इस प्रस्ताव पर विचार करने और इसे पारित करने वाला हो, तो दिल पर दिमाग की जीत होनी चाहिए। यदि आवश्यकता हो, तो मान्यता प्राप्त विद्वानों के विचारों पर भी विचार किया जाना चाहिए, तत्पश्चात् इन विषयों पर निर्णय लेने चाहिए।

महोदय, मुझे लगता है कि यह चर्चा और इन विषयों पर चर्चा आज अचानक ही नहीं हुई है, बल्कि इस देश में जो सोश्यो-पॉलिटिकल चेंज हो रहा है, कहीं न कहीं उससे भी इन विचारों की सृष्टि हुई है। ये कोई नये विचार नहीं हैं, बल्कि मैं कहूँगा कि ये नयी आकांक्षाएँ हैं। ये ऐसी आकांक्षाएँ हैं, जो बहुत दिनों तक दबी हुई थीं और अब वे उभर रही हैं, मुखर हो रही हैं।

महोदय, अभी हमारे उपराष्ट्रपति, श्री एम. वेंकैया नायडु जी की कुछ बातें सामने आई थीं। उन्होंनेअभी हाल में कुछ बातें कही थीं। "He defended saffronisation of education and the promotion of mother tongues", while addressing the audience. उन्होंने फिर कहा- "Yes, we want to go back. What is wrong with that? We want to go back to our roots, know the greatness of our culture and heritage, and understand the great amount of treasure in our Vedas, in our books, and in our scriptures. No, they don't want us to. But they want us to suffer from any inferiority complex. They say you are saffronising. What is wrong with saffron? I don't understand."

महोदय, ये बातें अगर एक बड़े दिल के साथ सोची जाएँ तो पता चलेगा कि जो बात आज राकेश जी ने कही है, वह कहीं न कहीं इस बात से जुड़ी हुई है कि हम पीछे के इतिहास को क्यों भूलना चाहते हैं? यह प्रश्न न तो पहले किसी ने पूछा और न ही किसी ने उसका जवाब दिया, बल्कि जो प्रश्न पूछने वाले थे, उनको ही दकियानूसी और साम्प्रदायिक कहकर दरकिनार किया जाता था। लेकिन यह भी एक तथ्य है कि आज उन्हीं लोगों को जनता ने अपना बहुमत दिया और उनकी सरकार बनी। इसमें युवा वर्ग भी काफी हद तक शामिल है और उसका भी समर्थन उन लोगों को मिल रहा है। Well-educated and well-informed people are also supporting these kinds of thoughts because they are practical thoughts; they are not impractical thoughts.

महोदय, हम जापान का उदाहरण लें। जापान के लोगों ने western values और western culture को day-to-day life में, टेक्नोलॉजीमें, ऑफिस में और बिज़नेस में बहुत अच्छी तरह से adopt किया है। वे लोग केवल वही जानते हैं, उसके अलावा वे कोई और धर्म नहीं जानते हैं।जब बात उनके पर्सनल जीवन या उनके ritualsकी होती है, तो वे hundred per cent Japanese हैं। आज वहां लड़कियों को जब भी skirt पहनने का मौका मिलता है तो वेkimono के अलावा कुछ नहीं पहनती, धार्मिक संस्कारों में उन्हें kimono पहनने में न तो संकोच होता है और न ही आस्कत होता है, बल्कि वे बहुत गर्व के साथ उसे पहनती हैं।

महोदय, भारत अपने आप में एक विश्व होता था। यदि हम इतिहास में थोड़ा पीछे जाएं तो पाएंगे कि हम अपने आप में एक दुनिया थे। यदि हम scientific fiction की बात करें, यदि अंतरिक्ष से कोई व्यक्ति दिल्ली आ जाए और यहां कुछ दिन रह कर वापस जाए, फिर उससे पूछा जाए कि ब्रह्मांड कैसा है, भारत कैसा है या दुनिया कैसी है, धरती कैसी है, तो उसने दिल्ली में जो देखा, वह उसी का वर्णन करेगा कि वहाँ की दुनिया ऐसी है, धरती ऐसी है, क्योंकि इसके अलावा उसने और कुछ नहीं देखा। हमने भी जब कुछ नहीं देखा था, तब अपने आप में हम सब कुछ थे। जब हमारा वैश्वीकरण हुआ तो हमने सबको देखा और हमें भी सबने देखा। जब चीनी बौद्ध भिक्षु Hiuen Tsang ने 7वीं शताब्दी में भारत का दौरा किया था, तब उनका कथन जानकारी का भंडार बना हुआ था। उन्होंने धार्मिक angle से भी कुछ चीज़ों को देखा था और record किया था, लेकिन एक तथ्य यह है कि इस देश के दक्षिणी भाग और ओडिशा जैसे पुराने और सम्पन्न राज्य के बारे में उन्होंने ज्यादा कुछ वर्णन नहीं किया था। उनसे कलिंग के बारे में कुछ कहना या तो छूट गया था या उन्होंने देखा नहीं था अथवा ग़ौर नहीं किया था, उसका रिकॉर्ड नहीं था या चाहे जो भी हुआ हो, लेकिन तथ्य यह है कि दुर्भाग्य से उन्होंने उसके बारे में ज्यादा वर्णन नहीं किया, जबकि वे राज्य भी संपन्न और विकसित थे।

महोदय, इतिहास, संस्कृति और आस्था की समझ रखने वाला व्यक्ति अपनी समझ तक ही सीमित रहता है। ऐसा होता है कि हिन्दी-भाषी क्षेत्र का एक व्यक्ति, जिसकी दिव्यता हमारे महाकाव्य की अपनी स्थानीय समझ से बहती है, उसे दक्षिण या पूर्व में यह बात अजीब लग सकती है कि उसकी मूर्ति उन संस्कृतियों में उतनी पूज्य नहीं है।

महोदय, अभी हमारे मित्रों ने धर्म के बारे में कुछ बातें कही हैं। विनय जी ने भी पाणिनी के बारे में बात कही। मैं एक उदाहरण देता हूं कि पाणिनी क्राइस्ट सेकरीब 200 साल पहले या उसके आस-पास आए थे, जिन्होंने संस्कृत का व्याकरण दिया। जैसा हम जानते हैं कि ग्रंथों में वेद इस संरचना का पालन नहीं करते हैं और इसका समझना मुश्किल है। लेकिन, नारायण ऋषि द्वारा सुनाए गए ऋग्वेद के 10वें मंडल में पुरुष शक्ति में देखिए, यह वेद का वह हिस्सा है, जिसमें चार हिन्दू जातियों का उल्लेख है। हर हिन्दू सोचता है कि ये चार हिन्दू जातियां वैदिक संस्कृति की स्वीकृति हैं, लेकिन उनके मार्ग में पाणिनीका व्याकरण आता है, क्योंकि उसमें जो व्याकरण मिलते हैं, वे उस समय तक इजाद नहीं हुए थे, जब ये वेद लिखे गए थे।

महोदय, जहां तक मनुस्मृति का सवाल है, तो मैं बताना चाहूंगा कि Dr.Debashish Gupta के द्वारा लिखी गई एक किताब है, जिसमें मनुस्मृति के बारे में कई आलोचनाएं हुईं। मैं उस बारे में पढ़ना चाहूंगा, "Manusmriti texts attacked vegetarian food habits with a vengeance and prescribed varieties of meat in Hindu rituals, but to no avail, for vegetarianism by then had already been recognised as a pious way of life." महोदय, यह संस्कृत में है, जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद है, "The food of the saints included cereals, milk, *som rasa*, meat and mineral salt." महोदय, मैं यह इसलिए बोल रहा हूं कि आज मनुस्मृति की स्वीकृति किन लोगों के बीच में है। मैं समझता हूं कि पॉलिटिकल मुद्दे को छोड़कर मनुस्मृति की धारणा आम हिन्दू या आम

समाज का व्यक्ति स्वीकार नहीं करता है, वह अपने आप को उससे नहीं जोड़ता है और न ही उस समय जोड़ा जाता था, क्योंकि उन्होंने कई बातें कही हैं। उन्होंने कहा है कि जो हमारे संत थे, वे मदिरा-मांस खाते थे। मेरे ख्याल से इसको स्वीकार करने की मानसिकता आम हिन्दू को बिल्कुल नहीं है। आज यदि हम मनुस्मृति के नाम पर या मनु के नाम पर किसी एक वर्ग को गलत ठहराएं, तो यह उचित नहीं होगा। मैं समझता हूं कि हम जो प्रयास कर रहे हैं, उसमें हम इन चीज़ों को ठीक करने के लिए भी आगे बढ़ें, इस पर चर्चा करें और इसमें शोध करें। यह शोध आम आदमियों तक, हर बच्चे, जवान और हर जानकार तक पहुंचे। इसकी तरफ हमें सोचना चाहिए। चूंकि ये विकृतियां जो हमें सिखाई जाती हैं, बताई जाती हैं, जब तक इन विकृतियों पर विस्तृत चर्चा नहीं होगी, जब तक इन पर विस्तृत विचार नहीं होगा, तब तक हम इन्हें दूर नहीं कर सकते।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं Kashmir Files film के बारे में सिर्फ इतना ही कहूंगा कि एक दुखद घटना हुई, जिसे रिकॉर्ड किया गया। आज इस बात पर डिबेट हो रही है कि क्या इन दुखद घटनाओं को हमें याद करना चाहिए या नहीं करना चाहिए? इस बात पर अफसोस है कि यह डिबेट का विषय बन रहा है, बल्कि यह होना चाहिए कि हां, यह हुआ है। यदि चर्चा का विषय नहीं होता, तो यह चिंता का विषय होना चाहिए कि देश में बहुत बड़ी घटना हो गई है, यह आम चर्चा का विषय नहीं हुआ, समाज के सामने पूरे तथ्य सामने नहीं आए और उसके निराकरण का भी उपाय नहीं हुआ। आज यहां राकेश सिन्हा जी ने बार-बार नालंदा विश्वविद्यालय के बारे में बात की। वह हमारा गर्व है। तक्षशिला विश्वविद्यालय भी हमारा गर्व है, अब वह पाकिस्तान में है, वह अलग बात है, लेकिन वह भी हमारा ही है। हम एक ही थे। जब भी नालंदा के बारे में बात करते हैं, तो बख्तियार खिलजी के बारे में बात करते हैं। आज वहां पर बख्तियारपुर के नाम से एक शहर बसा हुआ है। इस देश को निर्णय करना पड़ेगा कि हमारे ऊपर जो आक्रांता थे, जिन्होंने हमारी सभ्यता का विनाश किया, क्या हम उन्हें महिमा मंडित करेंगे! इस पर विचार करना पड़ेगा। अब तक यदि नहीं किया है, तो समय आ गया है कि इन चीज़ों पर चर्चा होनी चाहिए, आम सहमति बननी चाहिए कि कब तक हम इन चीज़ों को करेंगे। क्या हम आक्रांताओं को एक संदेश नहीं देंगे कि जिन लोगों ने हमारे नालंदा विश्वविद्यालय को बरबाद किया, उसको जलाया, हमने उनके नाम पर एक शहर का नाम रखकर उनको महिमा मंडित किया है। इतिहास ने ऐसा किया होगा, लेकिन हम कब तक उसको आगे ले जाते रहेंगे। मैं यह इसलिए नहीं बोलता हूं कि यह कीजिए, लेकिन मैं यह कहता हूं कि यदि कोई कहता है, ऐसा न करें, तो उस पर सोचना चाहिए कि वह संकीर्ण विचारों वाला व्यक्ति है। इस दृष्टि से आप समझें। अभी हम लोगों ने colonialism or imperialism के बारे में कहा। यह ब्रिटिश राज तक नहीं था। ये अंग्रेजी के शब्द हो सकते हैं, लेकिन जो इनकी मूल भावना है, वह ब्रिटिश राज के पहले जो शासन था, जो विदेशी आक्रांताओं का शासन था, यह भावना उस समय भी थी और यदि आज हम इस चीज़ से पीड़ित हैं, तो उस समय भी हम पीड़ित हुए थे।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं अंत में यह कहना चाहता हूं कि राकेश जी ने सुझाव दिए हैं, उन सुझावों में दो-तीन चीज़ें मैं जरूर कहूंगा कि कला, संस्कृति पर रिसर्च के संस्थान हैं, बड़ी-बड़ी यूनिवर्सिटीज़ में डिपार्टमेंट्स हैं, तो क्या इसके बावजूद सचमुच में हमें और भी रिसर्च इंस्टीट्यूट्स

बनाने की आवश्यकता है? मैं समझता हूं कि निर्णय लेने की आवश्यकता है कि इन विषयों पर हमें रिसर्च करनी है, इन विषयों पर हमें शोध करना है, इन विषयों को हमें आगे लाना है, ये निर्णय हमें लेने हैं। अंत में उन्होंने कहा है कि "Make an organised effort in the country for attainment of Swaraj; self-rule of ideas." Now, I want to ask my friends कि क्या हमें वैचारिक स्वतंत्रता नहीं है, क्या हमें आज स्वराज की आवश्यकता है? मैं तो यह समझता हूं कि भारत एक ऐसा देश है, जिसमें जितनी हमें विचारों की स्वाधीनता है, हम समझते हैं कि उतनी ज्यादा किसी दूसरे समाज में नहीं है। आज एक दकियानूसी परिवार के बच्चे को वेस्टर्न कपड़े पहनने से मना नहीं किया जा सकता है। यह एक छोटा-सा उदाहरण है। ये पता नहीं कि क्या कहना चाहते हैं कि वैचारिक आज़ादी के लिए organized effort करना चाहिए। मैं आज समझ नहीं पा रहा हूं, लेकिन यह हो सकता है कि वे उदाहरण के द्वारा अपने जवाब में क्लियर करें। मैं समझता हूं कि OTT में मां-बहन की गाली खुले आम दी जा रही है और हम सब लोग इसको स्वीकार कर रहे हैं। इससे ज्यादा बड़ा उदाहरण वैचारिक आज़ादी का औरकुछ नहीं हो सकता है। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Thank you. Next speaker is Dr. Sonal Mansingh but we are just about to hit 6 o' clock.

6.00 P.M.

Now, Dr. Sonal Mansingh. But, we are about to hit six o'clock. ...*(Interruptions)*...

डा. सोनल मानसिंह (नाम निर्देशित) : श्री राकेश सिन्हा जी ने जो विचार रखे हैं, मैं उनका पूर्ण हृदय से अनुमोदन करती हूं और साथ ही साथ कुछ दो-तीन बातें जल्दी से रखने की कोशिश करूंगी। पहले तो डा. विनय सहस्त्रबुद्धे जी ने जो 'सौम्य संपदा' शब्द इस्तेमाल किया...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Member, sorry, we have just got to six o'clock. आप next time continue करेंगी। We will have to stop at 6 p.m.

DR. SONAL MANSINGH: When is the next time?

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Whenever it is scheduled for discussion. ...*(Interruptions)*... The week after.

DR. SONAL MANSINGH: Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): We will now go to Special Mentions. Shri P. Wilson; absent. Shri Syed Nasir Hussain; absent. Shri Abir Ranjan Biswas. Would you like to lay or read?

SPECIAL MENTIONS- *Contd.*

Need for conducting decennial 2021 census immediately

SHRI ABIR RANJAN BISWAS (West Bengal): I would like to read, Sir. Sir, good data is critical to good policy-making. Apart from being used to demarcate constituencies, the census data is also vital to the administration, and planning of key welfare schemes could be affected by the delay. The census also measures migration by counting those whose current residence is different from their place of birth, thus studying migration trends when compared to data from the last census. This would enable making of policies in such a way that something like the migration crisis of 2020 will not occur again and it can be calculated that migrant workers get healthcare and social service where they are. The various large-scale surveys being planned cannot be based on a population frame based on the ten-year-old data. In the time like this, population information with its vital characteristics is invaluable to make interventions to help people.

Where elections are being conducted in over six States, the reason of covid has been given by the Government for not conducting the census. Hence, the census cannot be delayed any further. I urge the Government to conduct the decennial census immediately.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Now, Dr. Ashok Bajpai; absent. Shri Ramkumar Verma.

Need for fixing iron railing on dividers on National Highways

श्री रामकुमार वर्मा (राजस्थान) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से भारत सरकार के सड़क परिवहन और राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्रालय की तरफ ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि राजस्थान प्रदेश में नेशनल हाईवे NH-21 जयपुर से आगरा, NH-12 जयपुर से कोटा और NH-8 जयपुर से